Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

ग्रामीण समाज में विद्यमान पर्यावरणीय मूल्य

डॉ0 सत्या मिश्रा*

भारतीय समाजशास्त्र का अधिकांश भाग ग्रामीण समाज के अध्ययन से सम्बन्धित रहा है। 19वीं शताब्दी के पाँचवें दशक से लेकर अब तक के हुए अध्ययनों में गाँवों का समग्रतावादी, उसके विशिष्ट पक्षों यथा समाजिक– सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक संरचना के साथ–साथ नव–उदीयमान प्रवृत्तियों का अध्ययन होता आया है तथापि भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र में पर्यावरणीय विमर्श नया नहीं है। इन अध्ययनों में जहाँ कहीं भी परम्पराओं प्रथाओं, धर्म, पर्व एवं त्यौहारों तथा अनुष्ठानों की व्याख्या की गई है वहाँ ग्रामीण संस्कृति में निहित पर्यावरणीय मूल्यों यथा–स्वच्छता एवं सफाई, प्रकृति–पूजा (वृक्ष–संरक्षण, जल संरक्षण एवं उसकी जीवन में महत्ता) इत्यादि का वर्णन स्वतः किया गया है। एस0सी0 दुबे के भारतीय ग्राम नामक अध्ययन में इसका रोचक विवरण मिलता है जिसमें उन्होंने तेलुगु क्षेत्र के शमीरपेट गांव में नव–वर्ष पर मनाये जाने वाले उगादी नामक त्यौहार का विवरण प्रस्तुत किया है (भारतीय ग्राम : 2000, पृ0 100–101)। वर्तमान समय में संस्थागत स्तर पर ग्रामीण पर्यावरण संबंधी अभियानों एवं योजनाओं का जहाँ कहीं भी अध्ययन हो रहा है वहाँ ग्रामीण पर्यावरणीय मूल्यों को भी उद्घाटित किया जा रहा है।

21वीं शताब्दी में भी भारतीय समाज में गांवों को नकारा नहीं जा सकता। वर्ष 2011 की भारतीय जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 68.8 प्रतिशत भाग अब भी ग्राम्य संस्कृति से जुड़ा है (भारतीय जगणना 2011) और भारतीय ग्राम्य–संस्कृति की समृद्ध परम्परायें मानवता की धरोहर हैं। प्रस्तुत शोध प्रपत्र उनके प्रलेखीकरण का एक प्रयास है। प्रस्तुत अध्ययन लखनऊ जिले की बख्शी का तालाब तहसील के गोहनाकलां गांव के नृजातिशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है। भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र में 'मोहाना' नाम से यह गाँव अत्यंत प्रसिद्ध है। मोहाना (छद्म नाम, वास्तविक नाम गोहना कलाँ) गॉव का अध्ययन प्रसिद्ध मानवशास्त्री एवं समाजशास्त्री डी0एन0 मजूमदार ने उन्नीसवीं शताब्दी के पाँचवें दशक में गहन क्षेत्रकार्य एवं नृजातिविवरणात्मक पद्धति के आधार पर किया था जिस पर आधारित पुस्तक 'कास्ट एवं कम्युनिकेशन इन एन इंडियन विलेज' 1958 में प्रकाशित हुई।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र गोहनाकलां गांव के पुर्न अध्ययन पर आधारित है अतः इसमें भी नृजाति शास्त्रीय अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। किसी समाज के प्रथानुगत व्यवहारों, विश्वासों एवं मनोवृत्तियों का विस्तृत वर्णनात्मक लेखा–जोखा तैयार करने की विधा नृजाति लेखन कहलाती है (रावत, हरिकृष्ण : 2007, पृ0 सं0 155–156)। प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्रकार्य, साक्षात्कार, घर–घर जाकर किये गये सर्वेक्षण, प्रचलित लोक कथाओं, किवंदतियों एवं लोकगीतों में उपलब्ध ज्ञान से तथ्य संकलित किये गये साथ ही रीति रिवाजों, त्यौहारों, उत्सवों, प्रथाओं एवं परम्पराओं में निहित पर्यावरणीय संज्ञानात्मक आयामों का संदर्भ ग्रहण किया गया है।

लखनऊ नगर से लगभग 6.4 किलोमीटर पर स्थित गोहनाकलाँ गांव एक बहुजातीय गांव है जहाँ 13 जातियाँ विद्यमान हैं (मिश्रा, सत्या : 2009, पृ0सं0 48 एवं पृ0सं0 52)। अध्ययन के दौरान गोहना कला की ग्राम्य संस्कृति में अप्रकट रूप से पर्यावरण सह की परम्परायें निहित पई गई है और ग्रामीण संस्कृति में जीवन शैली पर्यावरण मित्र रही है। सामान्य जीवन में पर्यावरण के मुद्दे अप्रकट रूप में विद्यमान है जिन्हे कतिपय बिन्दुओं के अन्तर्गत विश्लेषित किया जा सकता है –

1. धर्म, स्वच्छता एवं सफाई तथा पवित्रता के मध्य गोहनाकलां गांव में गहन सम्बन्ध पाया गया है। यहाँ विद्यमान सभी 13 जातियाँ हिन्दूधर्म को मानने वाली हैं जिनमें विभिन्न आनुष्ठानिक अवसरों पर स्वच्छता का विशेष महत्व हैं। यद्यपि धार्मिक पवित्रता के पालन

*एसोशिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, नारी शिक्षा निकेतन (पी0जी0) कॉलेज, लखनऊ।

के जातिगत आधार पाये गये हैं यथा–उच्च एवं पवित्र व्यवसायों से सम्बन्धित जातियों; ब्राह्मण, ठाकुर जो कि गाँव की प्रभुत्वशील जाति भी हैं में धार्मिक कर्मकाण्डों का अधिक कड़ाई से पालन किया जाता हैं। उनमें स्नान एवं व्रत–उपवास का महत्व दिन–प्रतिदिन के जीवन में अब भी बना हुआ है जबकि अस्वच्छ व्यवसायों से सम्बन्धित अनुसूचित जातियों एवं मध्यवर्ती जातियों में यद्यपि स्वच्छता तथा सफाई के मूल्य धार्मिक विश्वासों के रूप में विद्यमान है लेकिन वर्तमान समय में इससे अधिक ये जातियाँ उच्च जातियों का अनुकरण करती दृष्टिगत होती हैं। ये जातियाँ न केवल भुइंया बाबा, सती माता जैसे स्थानीय देवी देवताओं (ग्राम देवी एवं देवताओं) से सम्बन्धित आनुष्ठानिक अवसरों पर साफ–सफाई पर बल देती हैं बल्कि नवरात्रि, कृष्ण जन्माष्टमी तथा दशहरा एवं दीपावली जैसे अवसरों पर भी घर तथा व्यक्तिगत स्वच्छता, उपवास एवं स्नान को बढ़–चढ़कर महत्त्व देने लगी हैं।

2. वृक्ष पूजा एवं वृक्षों का महत्त्व ग्राम्य संस्कृति की विशेषता है। प्रकृति पूजा के उदाहरण ग्रामीण समाजशास्त्र के विभिन्न अध्ययनों में यथा दुबे के भारतीय ग्राम (1955) एम0एन0 श्री निवास के भारत गाँव (1955), डी0एन0 मजूमदार के 'कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एव इंडियन विलेज (1958) तथा छोर का एक गांव (1960) में सविस्तार मिलते हैं। गोहनाकलां गांव में नीम, पीपल, बरगद एवं औषधीय महत्व के पौधे तुलसी इत्यादि का महत्व ग्राम्य संस्कृति के समृद्ध पर्यावरणीय संज्ञान का उदाहरण है।

3. गोहना कलां गांव की संस्कृति में कृषि, आवास एवं जीवन–यापन के लिए पर्यावरण मित्र प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है जिसकी उपादेयता समाप्त होने के पश्चात उसका पुर्नचक्रण संभव है जैसे गृह–निर्माण में घास–फूस के बने छप्परों का प्रयोग। दिन–प्रतिदिन की दिनचर्या में ऐसी वस्तुओं का प्रयोग होता है जो आसानी से अपघटित हो जाती हैं यथा–सूती वस्त्र, मिट्टी के बर्तन इत्यादि। तथापि गोहनाकलां गांव में बढ़ते नगरीय सम्पर्क, सूचना के साधनों मोबाइल फोन एवं टेलीविजन के बढ़ते प्रयोग एवं प्रभावों के कारण, आधुनिकीकरण, नवीन प्रौद्योगिकी के चलते ग्रामवासी बड़े पैमाने पर जीवनयापन के आधुनिक साधनों का प्रयोग करने लगे हैं। मिट्टी के बर्तनों के स्थान पर स्टील एवं चीनी मिट्टी के बर्तन, विशिष्ट अवसरों पर जैसे विवाह, मुंडन, जन्मदीन, इत्यादि पर डिस्पोजेबल बर्तनों का प्रयोग होने लगा हैं जो कि पर्यावरण मित्र ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं जीवन शैली के समक्ष चुनौती बनते जा रहे हैं। गाँव में कूड़ा प्रबन्धन कृषि एवं पर्यावरण मित्र है यथा–ग्रामवासी दिन–प्रतिदिन के कूड़े तथा गोबर को एक स्थान पर एकत्रित करते रहते हैं जिसे 'घूर' की संज्ञा दी जाती हैं वर्षा ऋतु के पूर्व एकत्रित कूड़े को खेतों में ढेर के रूप में डलवा दिया जाता हैं। वर्षा के दौरान यह कूड़ा अपघटित हो जाता है और उत्पादक खाद के रूप में तैयार हो जाता है जिसे जुताई करके खेत की मिट्टी में मिला दिया जाता हैं।

4. गोहनाकलां गाँव में जल स्वच्छता, पवित्रता एवं साफ–सफाई का एक प्रमुख माध्यम है। गाँव में कोई नदी विद्यमान नहीं है परन्तु छोटे एवं बड़े आकार के 6 तालाब स्थित हैं। ब्राह्मण एवं ठाकुर जातियों में पुत्र तथा पुत्री के विवाह के अवसर पर 5 या 6 दिन पूर्व मनाये जाने वाले 'छई दरेती' से सम्बन्धित पूजा तालाब के किनारे की जाती है इसी प्रकार से पुत्र के विवाह के पश्चात् 'मण्डप सेरवाने' भी घर की स्त्रियाँ तालाब के किनारे जाती हैं। जल गोहनाकलां गाँव में अस्थाई पवित्रता का प्रतीक है यथा–यदि गाँव के किसी उच्च जाति का व्यक्ति निम्न जाति के सम्पर्क में आ जाता है या छू लिया जाता है तो उच्च जाति का व्यक्ति

स्नान द्वारा अपवित्रता को दूर करता है और पवित्र मान लिया जाता है।

5. गोहनाकलाँ गांव में स्वच्छता तथा साफ–सफाई एक भौतिक क्रिया के साथ–साथ एक जीवन शैली है, यह एक सामाजिक मूल्य है जो कि भौतिक अव संरचनात्मक परिवर्तनों के साथ नहीं बदलती है। यहाँ स्वच्छता सम्बन्धी मूल्य एवं क्रियाविधियों के दो तरीके प्रचलित है एक पारम्परिक और दूसरे आधुनिक अनेक परिवारों में सरकारी अथवा व्यक्तिगत शौचालय उपलब्ध हैं लेकिन उनका उपयोग नही किया जाता और इसके स्थान पर पारम्परिक तौर–तरीके से अपनाये जाते हैं। गांव में अवशिष्ट विस्तारण और जल–मल की निकासी की भौतिक संरचना अपर्याप्त है परन्तु जहाँ संरचना विद्यमान है वहाँभी ग्रामीणजन पारम्परिक तरीकों को अपनाते हैं और उन्हें सरल समझते हैं। अध्ययन में यह पाया गया कि दिन–प्रतिदिन की दिनचर्या में स्वच्छता संबंधी मूल्यों एवं क्रियाविधियों में परिवर्तन मंद गति से हो रहे हैं। यहाँ व्यक्तिगत स्वच्छता पर तो बल दिया जाता है परन्तु सामुदायिक स्वच्छता के मूल्य एवं विचार लगभग अनुपस्थित हैं।

6. गोहनाकलां में वर्षभर मनाये जाने वाले पर्व एवं त्यौहार पर्याावरणीय मूल्यों से ओत–प्रोत हैं। प्रत्येक पर्व के अवसर पर प्रातः काल स्नान, घर की साफ–सफाई (कच्चे घरों में गोबर से घर को लीपकर) तथा पूजा का विधान पाया जाता है। जीवन जीने के लिए आवश्यक जल, वायु, अग्नि जैसे तत्व जिन स्रोतों से पोय जाते हैं उनकी पूजा श्रद्धा के साथ प्रचलित है। फसलों से सम्बन्धित त्यौहार यथा–नवां, खिचड़ी, तिलवा, हरछठ, सेतुवाही अष्टमी, सेतुवाही अमावस, जगन्नाथ जी की पूजा इत्यादि ग्रामवासी तत्परता से मनाते हैं। गोहनाकलां में कृषि आज भी आजीविका का प्रमुख साधन है फलतः चक्र सम्बन्धी अनुष्ठानों का वहाँ के लोकजीवन में अत्यन्त महत्त्व बना हुआ है।

7. गॉव के रीति रिवाजों एवं प्रथाओं–परम्पराओं में वृक्षों एवं उनके उत्पादों की पूजा, जल, सूर्य, चन्द्रमा की पूजा, विभिन्न अनाजों का उपयोग सहज भाव से प्रचलित है। प्राकृतिक पर्यावरण के बिना जीवन असंभव है अतः प्रकृति पूजा ग्रामवासी अत्यन्त श्रद्धा तथा विश्वास के साथ निष्पादित करते हैं।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उ0प्र0 के लखनऊ जिले की न्याय पंचायत गुडम्बा, तहसील बख्शी का तालाब के एक गांव गोहनाकलां में विद्यमान पर्यावरणीय मूल्यों को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि उक्त गाँव में पर्यावरणीय चेतना अप्रकट रूप में निहित है। यहाँ के धार्मिक विश्वास, पर्व एवं त्यौहार, अनुष्ठान एवं परम्परायें पर्यावरणीय मूल्यों से ओत–प्रोत हैं।

सन्दर्भ –

1. www.censusindia.gov.in (भारतीय जनगणना, 2011)
2. दुबे, एस0सी0; 2000, भारतीय ग्राम (अनु0 योगेश अटल), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. मजूमदार, डी0एन0: 1958, कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंडियन विलेज, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
4. रावत हरिकृष्ण : 2007, उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर
5. मिश्रा, सत्या : 2009, शोध प्रबन्ध 'ग्राम्य समाज में निरन्तरता एवं परिवर्तन, उ0प्र0 के एक पूर्व अध्ययनित गाँव का पुर्न अध्ययन।
6. श्री निवास, एम0एन0 2000, भारत के गांव (अनु0 मधुबी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. मजूमदार, डी0एन0 : 1960 छोर का एक गाँव (अनु0 चन्द्रभाल त्रिपाठी), एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई।